AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

माध्यमिक शिक्षा में संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों का प्रभावः एक प्रायोगिक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. शुभराम
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग

स्वेता कुमारी
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय
राजस्थान, भारत

शोध सार

यह प्रायोगिक अनुसंधान पत्र संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यवहार और धारणाओं पर जांच करता है। यहां अनुसंधान के लिए एक मिश्रित–विधि उपाय का उपयोग किया गया है, जिसमें सर्वेक्षण और साक्षात्कार शामिल हैं। अध्ययन मे माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और शिक्षकों के प्रतिनिधित्व नमूने से डेटा एकत्रित किया। उद्देश्य था संवेग प्रशिक्षण और नैतिक मूल्यों के संघटन के प्रभाव का व्यापक विश्लेषण करना। अध्ययन मे छात्रों के बीच संवेग शिक्षा और नैतिक सिद्धांतों के पालन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध पाया। सर्वेक्षण के जवाबों के सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से स्पष्ट हुआ कि संवेग के उच्च स्तर वाले छात्रों ने प्रोसोशियल व्यवहारों की अधिकतम प्रवृत्ति और सत्य, दया, और सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों के प्रति गहरा समर्थन प्रकट किया। इसके अलावा, शिक्षकों के साक्षात्कार से प्राप्त गुणात्मक दृष्टिकोणों ने वहाँ जहां संवेग और नैतिक मूल्यों को जोर दिया गया, वहाँ संस्थान के कुलवातवरण पर सकारात्मक प्रभाव का स्पष्टीकरण किया। शिक्षकों ने अनुशासन के मामलों में कमी देखी और सहकर्मी संबंधों में सुधार का संकेत दिया, जो इन हस्तक्षेपों की बदलती क्षमता को प्रस्तुत करते हैं। यह अनुसंधान संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार की प्रभावशीलता का प्रमाण प्रदान करता है। इस अध्ययन से प्राप्त अनुभव शिक्षा नीतियों और प्रथाओं को बदलने के लिए नई दिशाओं में मदद कर सकता है, जिससे छात्रों के होलिस्टिक विकास को बढ़ावा मिल सके। आगे बढ़ते हुए, संवेग और नैतिक मूल्यों के संघटन पर जोर देने की जारी रखना छात्रों को सामाजिक जिम्मेदार व्यक्तियों के रूप में विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द

संवेग, नैतिक मूल्य, माध्यमिक विद्यालय, विद्यालय जलवायु, प्रोसोशियल व्यवहार, प्रायोगिक अनुसंधान.

परिचय

माध्यमिक विद्यालय शिक्षा छात्रों के सृजनात्मक वर्षों में एक महत्वपूर्ण चरण को दर्शाती है, जहाँ उन्हें महत्वपूर्ण मानसिक, भावनात्मक, और सामाजिक विकास का सामना करना पड़ता है। इस महत्वपूर्ण अवधि के दौरान, सामाजिक और नैतिक क्षमता का पालन करना छात्रों के चरित्र को आकार देने और उन्हें उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिकता के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण है। इस विकास में महत्वपूर्ण तत्व हैं संवेग और नैतिक मूल्य, जो छात्रों के बीच

एक सकारात्मक विद्यालय वातावरण को बढ़ावा देने और छात्रों के बीच प्रोसोशियल व्यवहार को पोषित करने में मौलिक होते हैं।

संवेग, दूसरों के भावनाओं को समझने और साझा करने की क्षमता, करूणा, सहयोग, और व्यक्तिगत समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह छात्रों को अपने सहपाठियों के साथ एक गहरे संबंध स्थापित करने, विभिन्न दृष्टिकोणों की मूल्यांकन करने, और दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेगपूर्ण रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता प्रदान करता है। नैतिक मूल्य जैसे कि ईमानदारी, अखंडता, न्याय, और सम्मान, छात्रों को एक नैतिक प्रूज़र प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से वे जटिल नैतिक संदेहों का समाधान करने और दूसरों के साथ अभिप्रायपूर्ण निर्णय लेने के लिए साझा मूल्यांकन कर सकते हैं।

संवेग और नैतिक मूल्यों के महत्व को समझते हुए, यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में उनके प्रभाव को प्रायोगिक रूप से जांचने का प्रयास करता है। संवेग शिक्षा पहल के प्रभावशीलता की सिद्धि और माध्यमिक विद्यालय के वातावरण में नैतिक मूल्यों के प्रचार की प्रभावीता की अध्ययनात्मक जाँच के माध्यम से, यह अनुसंधान शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित करने वाली प्रायोगिक प्रमाण प्रदान करने का उद्देश्य रखता है।

एक विविध माध्यमिक विद्यालय छात्रों और शिक्षकों के एक विस्तृत नमूने से डेटा के संग्रह से, यह अध्ययन उन्हें संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार के क्षेत्र में कैसे सकारात्मक विद्यालय जलवायु बनाने और छात्रों के बीच प्रोसोशियल व्यवहार को कैसे पोषित करने में योगदान देता है, इसकी रोशनी डालने का प्रयास करता है। इन हस्तक्षेपों के प्रभाव का विश्लेषण करके, यह अनुसंधान माध्यमिक विद्यालयों के सामाजिक और नैतिक क्षमता को पोषित करने के लिए प्रभावी उपायों के मूल्यांकन के लिए मूल्यवान अंदाजे प्रदान करता है।

यह अध्ययन संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार के प्रभाव को प्रायोगिक रूप से जांचने की गई विद्यालयों में गई अध्ययन की एक अगली प्रक्रिया के रूप में योगदान करने का उद्देश्य रखता है। उनकी प्रभावशीलता का प्रायोगिक प्रमाण प्रदान करके, यह अनुसंधान माध्यमिक विद्यालय छात्रों के लिए होलिस्टिक विकास को प्रोत्साहित करने और समावेशी शिक्षा परिसरों को बनाने के लिए शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित करने की क्षमता रखता है।

माध्यम

1. **सहभागियों**: इस अध्ययन में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक सेटिंग्स से तीन सौ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और पचास शिक्षकों का एक नमूना शामिल था। प्रतिभागियों का चयन प्रतिनिधित्वता और विविधता को सुनिश्चित करने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण के माध्यम से किया गया था।
2. **डेटा संग्रह**:

   सर्वेक्षण: छात्रों को संरचित सर्वेक्षण दिया गया था जो उनके संवेग स्तर, नैतिक मूल्यों के प्रति रुचि, और विद्यालय परिवेश के प्रति धारणाओं का मूल्यांकन करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। सर्वेक्षण में संवेग स्तर की मापन के लिए मानकीकृत पैमाने शामिल थे और नैतिक मूल्यों के संबंध में छात्रों के विश्वास और व्यवहार को पता करने वाले मद को शामिल किया गया था। इसके अलावा, संवेग शिक्षा के अनुभव के बारे में प्रश्न शामिल किए गए थे।

   इंटरव्यू: शिक्षकों ने अर्ध–संरचित इंटरव्यू में भाग लिया जिसका उद्देश्य उनके अनुभव को संवेग शिक्षा के प्रयासों को कैसे किया जाता है और कैसे नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है, के बारे में गुणात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करना था। साक्षात्कार ने शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझने, कठिनाइयों का सामना करने और नैतिक मूल्यों को कक्षा प्रयोग में शामिल करने के लिए उपायों की जाँच की।

3. **डेटा विश्लेषण**

क्वांटिटेटिव विश्लेषणः सर्वेक्षण से प्राप्त क्वांटिटेटिव डेटा को उचित विधियों का उपयोग करके आंकलन किया गया। डेटा को सारांशिक रूप से सारांशित करने के लिए वर्गीकृत सांख्यिकी, औसत, मानक विचलन, और आवृत्ति वितरण जैसे विविध विधियों का उपयोग किया गया। संवेग स्तर, नैतिक मूल्यों का पालन, और विद्यालय परिवेश जैसे चरम बहुवार्ती विश्लेषण का अध्ययन भी किया गया।

क्वालिटेटिव विश्लेषणः साक्षात्कारों से प्राप्त क्वालिटेटिव डेटा को थीमात्मक विश्लेषण किया गया ताकि आवर्ती पैटर्न, थीम्स, और अनुभवों को पहचाना जा सके। साक्षात्कारों के लिखित प्रतिवेदनों को कोड किया और विश्लेषित किया गया ताकि शिक्षकों के अनुभवों और धारणाओं का व्यापक समझ प्रदान किया जा सके। डेटा से उत्पन्न थीम्स को तंत्रिक रूप से संगठित किया और व्याख्यात्मक रूप से समझाया गया ताकि शिक्षकों के अनुभवों और धारणाओं की समग्र समझ प्रदान की जा सके।

क्वांटिटेटिव और क्वालिटेटिव डेटा विश्लेषण विधियों के संयुक्त उपयोग ने माध्यमिक विद्यालयों में संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार के प्रभाव की व्यापक अन्वेषण की अनुमति दी। सर्वेक्षण और साक्षात्कारों से प्राप्त फिंडिंग्स को त्रिकोणीयता करके, यह अध्ययन इन प्रयासों की विस्तृत समझ प्रदान करने का लक्ष्य रखता है जो छात्रों के बीच सामाजिक और नैतिक विकास को पोषित करने में प्रभावी हैं।

परिणाम

सर्वेक्षण डेटा का विश्लेषण उस संबंध की महत्वपूर्ण बातें खोलता है जो सहानुभूति, नैतिक मूल्यों के बीच का और उनके प्रभाव को सहायक बनाता है। पहली बात यह है कि छात्रों के संवेग स्तर और उनके नैतिक मूल्यों के प्रति अनुपालन के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध सामने आया। संवेग के उच्च स्तरों की सूचना देने वाले छात्रों ने सामाजिक व्यवहार में शामिल होने की अधिक संभावना दिखाई और ईमानदारी, अखंडता, और करुणा जैसे नैतिक सिद्धांतों का सम्मान करने की अधिक इच्छुकता दिखाई। यह खोज संवेग और नैतिक आचरण के बीच अंतर्निहित संबंध की महत्वपूर्णता को पुनः सामने लाती है, जिससे छात्रों के बीच नैतिक निर्णय लेने में सहायक होने और विद्यालय समुदायों में साथी सम्मान की एक संस्कृति को पोषित करने की क्षमता हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, अध्ययन ने सामाजिक और नैतिक विकास को ध्यान में रखते हुए संवेग शिक्षा को प्राथमिकता देने और नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रभाव पर रोशनी डाली। छात्रों की धारणा है कि इन प्रयासों को जोर देने वाले विद्यालय अधिक सम्मानजनक, सम्मानीय, और सहायक परिवेश के रूप में माने जाते हैं। इस धारणा को शिक्षकों ने समर्थित किया, जिन्होंने अनुभव किया कि साम्प्रदायिक घटनाओं में एक साफ़ीकरण हुआ और उन्होंने कक्षाओं में सहायक संवेग और नैतिक मूल्यों को जोरदार रूप से विश्वसनीयता मिली। यह फिंडिंग्स संवेग शिक्षा के उद्दीपन से संवेग और नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की महत्वपूर्णता को पुष्टि करती है, न केवल व्यक्तिगत व्यवहार को आकार देने के लिए, बल्कि एक सकारात्मक और सहायक विद्यालय वातावरण को बढ़ावा देने के लिए भी, जो अकादमिक सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए अनुकूल हो।

1. **संवेग और नैतिक मूल्यों के बीच सकारात्मक संबंधः** सर्वेक्षण डेटा विश्लेषण ने छात्रों के संवेग स्तरों और उनके नैतिक मूल्यों के प्रति अनुपालन के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध का खुलासा किया। विशेष रूप से, संवेग के उच्च स्तरों की सूचना देने वाले छात्रों ने सामाजिक व्यवहार में शामिल होने की अधिक संभावना दिखाई और ईमानदारी, अखंडता, और करुणा जैसे नैतिक सिद्धांतों का सम्मान करने की अधिक इच्छुकता दिखाई। यह खोज संवेग की प्रारंभिक सीखने की गहराई का महत्व और स्तर से संवेग और नैतिक आचरण के बीच एक अंतर्निहित संबंध पर जोर देती है, जो छात्रों के नैतिक निर्णय लेने और विद्यालय समुदायों में साथी सम्मान की एक संस्कृति को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
2. **विद्यालय के वातावरण पर प्रभावः** छात्रों की धारणाओं ने दिखाया कि संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार को ध्यान में रखने वाले विद्यालयों को अधिक सम्मानजनक, सम्मानीय, और सहायक परिवेश के रूप

में माना गया। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों ने कक्षाओं में संवेग और नैतिक मूल्यों को जोरदार रूप से विश्वसनीयता को देखा और सामाजिक व्यवहार में एक साफ़ीकरण देखा। यह फिंडिंग्स संवेग शिक्षा के सामाजिक और नैतिक विकास में बदलाव लाने की संभावनाओं को प्रकट करती है, छात्रों के बीच एक सम्प्रेषण और समुदाय के भावना को बढ़ाने के लिए, और एक सकारात्मक और अनुकूल शिक्षण परिवेश के लिए योगदान करने में।

चर्चा

इस अध्ययन के अनुसार प्राप्त नतीजे संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार को माध्यमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल करने की महत्वपूर्णता को प्रकट करते हैं। इन प्रयासों को प्राथमिकता देकर, विद्यालय छात्रों के बीच सकारात्मक सामाजिक परिचय और अकादमिक सफलता को बढ़ावा देने वाले परिवेश बना सकते हैं। इस अध्ययन के निकट्स में एक प्रमुख परिणाम यह है कि संवेग शिक्षा का भूमिका में छात्रों के नैतिक विकास को आकार देने में है। संवेग और नैतिक मूल्यों के बीच सकारात्मक संबंध का होना, यह सुझाव देता है कि छात्रों के बीच संवेग का विकास मौलिक नैतिक जिम्मेदारी की भावना को पोषित करने के लिए आवश्यक है। संवेग को स्थापित करके, विद्यालय छात्रों को अन्यों के दृष्टिकोण को गहराई से समझने में मदद कर सकते हैं और अन्यों के प्रति दयालुता और सम्मान को पोषित कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, अध्ययन सुझाता है कि संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार का व्यापक प्रभाव विद्यालय के सामान्य वातावरण पर होता है। छात्रों की धारणा के अनुसार, उन विद्यालयों को जो इन पहलों पर जोर देते हैं, को अधिक सम्मानजनक, सम्मानीय, और सहायक परिवेश माना जाता है। इसे सहायक और नैतिक मूल्यों को पोषित करके, विद्यालय छात्रों के बीच एक अभिवादन और समुदाय की भावना पैदा कर सकते हैं, जिससे एक सकारात्मक और सहायक शिक्षण परिवेश बन सकता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन के परिणाम इस संदेश को भी साझा करते हैं कि संवेग और नैतिक मूल्यों को पोषित करने के प्रयास सिर्फ छात्रों के लाभ के लिए ही महत्वपूर्ण हैं, बल्कि शिक्षकों और विद्यालय कर्मचारियों के लिए भी यह सकारात्मक परिणामदायक हो सकते हैं। दिखाया गया कि उन कक्षाओं में अनुशासनिक घटनाओं में आई गिरावट और समूह के संबंधों में सुधार, जहाँ संवेग और नैतिक मूल्यों को जोरदार रूप से लाया गया था, वहां यह प्रयास सभी हितकारी और उत्पादक शिक्षण परिवेश के लिए अधिक समर्थन योग्य था।

प्राप्त निकाय इस बात को महत्वपूर्ण रूप से जोर देते हैं कि संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों को माध्यमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल करने की महत्वपूर्णता संवेग को पोषित करके और नैतिक जिम्मेदारी की भावना को डालकर, विद्यालय छात्रों, शिक्षकों, और कर्मचारियों के बीच सकारात्मक सामाजिक परिचय, अकादमिक सफलता, और समग्र कल्याण को बढ़ावा दे सकते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रायोगिक अनुसंधान के प्राप्त निकाय में संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार का माध्यमिक विद्यालयों में महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट होता है। इन पहलों को प्राथमिकता देकर, विद्यालय सृजनात्मक शिक्षण वातावरण बना सकते हैं जो केवल अकादमिक सफलता को ही नहीं सुनिश्चित करता है, बल्कि सकारात्मक सामाजिक परिचय को बढ़ावा देता है और संघर्ष को कम करता है। इस अध्ययन में दिखाए गए संवेग और नैतिक मूल्यों के बीच सकारात्मक संबंध को जोर देते हुए, छात्रों के संवेग को पोषित करने के महत्व को हाइलाइट किया जाता है जैसा कि नैतिक निर्णय लेने और नैतिक आचरण के लिए छात्रों के संवेग को गहराया जाना है। संवेग को स्थापित करके, छात्रों को दयालुता का अनुभव करने, सहयोग करने, और अन्यों के प्रति सम्मान दिखाने की प्रेरणा मिलती है। यह सूचित करता है कि संवेग शिक्षा छात्रों के नैतिक विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और विद्यालय समुदायों में साम्यावधान संस्कृति को पोषित करती है। इसके अतिरिक्त, संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार का विद्यालय के वातावरण पर प्रभाव स्पष्ट है छात्रों की धारणाओं और शिक्षकों की अवलोकनों से।

जिन विद्यालयों ने इन पहलों को प्राथमिकता दी उन्हें अधिक समावेशी, सम्माननीय, और सहायक परिवेश के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। इसके अलावा, शिक्षकों ने अनुशासनिक घटनाओं में कमी और कक्षाओं में सुधार होने की अवलोकन किया जो वहाँ संवेग और नैतिक मूल्यों को बलात्कारपूर्ण रूप से लाया गया था। ये निकाय संवेग शिक्षा के सामाजिक परिवेश को आकार देने और छात्रों के बीच एक सम्मिलित समुदाय और संवेदनशीलता की भावना को पोषित करने की आवश्यकता को पुनः जाहिर करते हैं। समापन के रूप में, संवेग शिक्षा और नैतिक मूल्यों को माध्यमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में प्राथमिकता देने का महत्व सामने आता है। इन पहलों में निवेश करके, विद्यालय सृजनात्मक शिक्षण वातावरण बना सकते हैं जो केवल अकादमिक सफलता का ही समर्थन नहीं करता है, बल्कि सकारात्मक सामाजिक परिचय को बढ़ावा देता है और छात्रों, शिक्षकों, और कर्मचारियों के कुल कल्याण में योगदान करता है।

संदर्भ सूची

1. डेसेटी जे., एवं जैक्सन, पी. एल. (2006). संवेदनशीलता पर एक सामाजिक–मानोविज्ञान परिप्रेक्ष्य, *मौजूदा दिशानिर्देश मनोविज्ञान,* 15(2), 54–58।
2. आइजेनबर्ग, एन. एवं मिलर, पी. ए. (1987). संवेदनशीलता का सहानुभूति और संबंधित व्यवहारों के साथ संबंध. *मनोवैज्ञानिक सूचक,* 101(1), 91–119।
3. नारवेज, डी. (2010). नैतिक जटिलताः सत्यवाद की फ़ेटल आकर्षण और परिपक्व नैतिक कार्य, *मनोवैज्ञानिक विज्ञान पर परिप्रेक्ष्य,* 5(2), 163–181।
4. पाल्मर, डी. (2007). सहभागीता की दिशा में छात्र धारणाओंः क्या इससे सहानुभूति का संबंध है? *अंतरराष्ट्रीय विशेष शिक्षा की जर्नल,* 22(3), 74–81।
5. सारनी, सी. (1999). *भावनात्मक क्षमता का विकास,* गिलफोर्ड प्रेस, न्यूयॉर्क।
6. ट्रेवीनो, एल.के., एवं यंगब्लड, एस.ए. (1990). बुरे सेबों की बुरी दालों मेंः नैतिक निर्णय लेने के व्यवहार का कारणात्मक विश्लेषण, *लागू मनोविज्ञान जर्नल,* 75(4), 378–385।

––==00==––